सुपर स्टार -14

“नक्श को ट्रेन में कुछ लड़कियाँ मिली… अगले दिन उन लड़कियों ने उसे किसी काम से एक फ़िल्म स्टूडियो में भेजा… वहाँ उसे ऑडिशन देने का मौक़ा मिला और वो चुन लिया गया… …”

Story By: (shakti-kapoor)
Posted: Sunday, June 14th, 2015
Categories: हिंदी सेक्स स्टोरी
Online version: सुपर स्टार -14

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

सुपर स्टार -14

उन्होंने कहानी सुनाना शुरू कर दिया।

'यह कहानी है एक लड़के की.. जिसके माँ-बाप का देहान्त बचपन में ही हो गया था। उसे बचपन से ही अपना ख्याल रखने की आदत थी.. उसके पास इतनी दौलत थी कि उसकी खुद की जिंदगी तो आराम से गुज़र सकती थी.. पर उसे अगर कुछ कमी थी तो बस प्यार की। बचपन में जब से एक्सीडेंट में उसके परिवार वाले चले गए थे.. तब से ही वो हर माँ-बाप में खुद के माँ-बाप को देखता।
बिना प्यार की परवरिश से उसे एक मानसिक बीमारी हो जाती है 'स्विच पर्सनालिटी डिसऑर्डर' ये एक ऐसी बीमारी है.. जिसमें एक ही इंसान अपने जीवन में दो अलग-अलग किरदार निभाता है। जिसका एक पहलू तो प्यार की तलाश में तड़फता रहता है.. पर वहीं दूसरा पहलू हर दिन गर्लफ्रेंड बदलता है।

कहानी में ट्विस्ट तब आता है जब उस लड़के को एक ही परिवार की दो बहनों से प्यार हो जाता है।

मैं उन्हें रोकता हुआ बोलने लगा- दो लड़कियों से एक साथ सच्चा प्यार ?

सुभाष जी- यही तो ट्विस्ट है। उस लड़के को तो पता भी नहीं है कि उसके जिंदगी में दो किरदार हैं.. और इसी वजह से वो एक साथ दो लड़कियों से प्यार कर बैठता है। वो भी दोनों सगी बहनें।

उसके सच्चे प्यार की वजह से दोनों लड़कियाँ भी उसे अपना दिल दे बैठती हैं.. पर कहानी के आखिर-आखिर तक दोनों लड़कियाँ को इस सच्चाई का पता नहीं चल पाता है कि दोनों

एक ही इंसान के प्यार में हैं।

कहानी के क्लाइमेक्स में दोनों लड़कियों को उसके बाप का दुश्मन उठा ले जाता है और जब वो दोनों को उस गुंडे से बचाता है.. तब जाके लड़कियों को उसकी असलियत का पता चलता है और इसके साथ ही वो लड़का भी अपनी बीमारी के बारे में जान जाता है।

अंत में सब ठीक होने पर दोनों लड़कियाँ उसके साथ रहने लगती हैं और लड़का आखिर में कहता है- 'एक साथ दो को झेलने से भला तो मैं पागल ही रहता।'

मैं- सुभाष जी इस कहानी को आपने लिखा है क्या ?
सुभाष जी- हाँ।
मैं उठा और उनके गले लग गया।

'मैं जैसी कहानी चाहता था.. बिल्कुल वैसी ही कहानी है यह..' मैंने कहा।
सुभाष जी- तो कहानी फाइनल न ?

मैं- बिल्कुल फाइनल। अब चलिए मुझे भूख लगी है। सुबह से कुछ खाया नहीं है, मैं सीधा यहीं आ गया।

फिर मैं और सुभाष जी पास के ही एक रेस्तरां में आ गए। छोटे शहरों में तो ऐसी जगहें देखने को भी नहीं मिलती हैं। सुभाष जी शायद वहाँ अक्सर आते जाते रहते थे। वहाँ के मैंनेजर हमें सुभाष जी की पसंदीदा टेबल तक ले गए। फिर हमने लंच आर्डर किया और आपस में बातें करने लग गए।

सुभाष जी- कैसे महसूस हो रहा है ?
मैं- किस बात के लिए ?
सुभाष जी- तुमने अपनी जिंदगी में काफी संघर्ष के बाद जो मुकाम हासिल किया है.. उस

बात के लिए कैसा फील कर रहे हो ?

मैं- संघर्ष वो करते हैं.. जिनकी कोई मंजिल होती है। मैं तो बिना किसी मंजिल के ही अपने कदम आगे बढ़ाए जा रहा था।
सुभाष जी- मैं कुछ समझा नहीं।
मैं- मैं वहाँ किस लिए आया था, आपको पता है ?

सुभाष जी- ऑडिशन के लिए।

मैं- जी नहीं.. मैं अपनी एक दोस्त की फाइल आप तक पहुँचाने आया था। गेट कीपर ने कहा कि अन्दर आने के लिए ऑडिशन देना होगा.. सो मैंने दे दिया। अब यह तो मेरी किस्मत थी कि बाकी किसी को एक्टिंग आती ही नहीं थी।

सुभाष जी- किसी भी काम का हुनर दो वजहों से किसी के अन्दर होता है। पहला.. या तो उसने जी जान से उस हुनर को सीखा हो या तो उसमें कुदरती भगवान् की देन हो और जहाँ तक तुम्हारी बात है.. तुमसे बेहतर एक्टर सच में.. पूरी मुंबई में नहीं होगा। वैसे किसकी फाइल लेकर आए थे तुम ?

मैं- निशा जो कोलकाता की रहने वाली है। उनकी एक डॉक्यूमेंट्री देख कर आपने कॉल किया था।

सुभाष जी- हाँ हाँ याद आया.. परसों रात को उनसे मेल पर बात हुई थी। आप जैसे जानते हो उसे ?
मैं- मैं अभी उन्हीं के साथ रह रहा हूँ।
सुभाष जी- लिव इन रिलेशन में !
मैं- नहीं सर.. हम दोनों अलग-अलग कमरे में रहते हैं।

अब खाना आ चुका था।

सुभाष जी ने खाना शुरू करते हुए कहा- मैं सच में निशा के काम से बहुत इम्प्रेस हूँ.. और उसने तो काफी सारे अवार्ड्स भी जीते हैं।
यह बात मुझे नहीं पता थी।

मैं- इस फिल्म में असिस्टेंट डायरेक्टर की जगह वो नहीं आ सकती है क्या ?
सुभाष जी- मैं बात करूँगा। उसकी जैसी काबिलियत है.. मुझे नहीं लगता कि उसे इस पोजीशन पर आने में ज्यादा दिक्कत होगी।
मैं- ठीक है.. सर आप देख लेना। अगर आप कल की मीटिंग करवा दें तो बढ़िया होगा।
सुभाष जी- मैं कॉल करके देखता हूँ।

फिर उन्होंने फोन पर किसी से बात की और मीटिंग होना कन्फर्म कर लिया।

मैं- थैंक यू सर।

सुभाष जी- अरे थैंक यू मत कहो। अब आप यशराज बैनर के स्टार हो। इतना तो हम कर ही सकते हैं। यहाँ आज हम आपकी ज़रूरत को समझेंगे.. तभी तो कल आप हमारे लिए वक़्त निकाल सकेंगे।

मैं उनकी बातों का मतलब समझ चुका था।
खाना ख़त्म हुआ और फिर हम वापिस स्टूडियो पहुँच गए।

सुभाष जी- अरे हाँ.. याद आया आज हमारे पिछली फिल्म की सक्सेस पार्टी है। मैं तुम्हें पता भेज दूँगा.. आज आ जाना। वहाँ तुम्हें फिल्म के बाकी स्टार्स से भी मिलवा दूँगा।

मैं- ठीक है सर.. वैसे मैं अपने दोस्तों को साथ ला सकता हूँ न ?

सुभाष जी- क्यों नहीं.. वैसे कितने पास बनवा दूँ ?
मैं- जी.. मेरे अलावा तीन पास बनवा दीजिएगा..
सुभाष जी- ठीक है।

मैं वहाँ से निकला और अपने फ्लैट पर आ गया। लगभग दोपहर के तीन बजे थे और घर में सब लंच में व्यस्त थीं।

तृष्णा- आ गए एक्टर बाबू।
मैं- हाँ जी.. वैसे मेरे पास आप सबके लिए एक खुशखबरी है।

मेरा कहना था कि सब लंच छोड़ कर मुझे घेर कर बैठ गईं।

मैं- यार आप सब ऐसे मत देखो मुझे.. मुझे घबराहट होने लगती है।

ज्योति- मेरे हुजूर.. अब इसकी आदत डाल लो। अब से हर रोज़ सब तुम्हें ऐसे ही देखेंगे।

मैं- ठीक है देखो फिर।

मैंने निशा की ओर देखते हुए कहा- निशा तुम अपनी तैयारी पूरी कर लो। तुम्हारी कल यशराज फिल्म्स में मीटिंग है। हो सकता है तुम्हें मेरी फिल्म में असिस्टेंट डायरेक्टर बनाया जाए।

निशा अपनी आँखें बड़ी करती हुई बोल पड़ी- क्या सच में ?
मैं- हाँ यार, अभी तक मैंने झूठ कहना अच्छी तरह सीखा नहीं है।
तृष्णा- और मेरे लिए क्या खुशखबरी है ?

मैं- आप सब को तैयार होकर.. मेरे साथ पार्टी में चलना है। यशराज की पिछली फिल्म की सक्सेस पार्टी है। रात आठ बजे वहाँ पहुँच जाना है। वहाँ जाओ सब से मिलो। हो सकता है

तुम लोगों का काम भी बन जाए।

मेरा इतना कहना ही था कि सब मेरे गले लग कर मेरे बालों की ऐसी-तैसी करने लग गईं और सबने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया और तेज़ आवाज़ में गाने बजा कर मुझे पकड़ कर डांस करने करने लग गईं।

आज मुझे अपने घर की बहुत याद आ रही थी। अगर वो सब भी मेरे साथ होते तो कितना अच्छा होता।

फिर सब तैयार होने चली गईं।
वैसे भी मुझे पता था कि इन सबको तैयार होने में कितना वक़्त लगने वाला है। इसीलिए मैं थोड़ी देर के लिए सोने चला गया।

तृष्णा की आवाज़ से मेरी नींद खुली। सात बजने वाला था और अब तक सब मेकअप को फाइनल टच ही दे रही थीं। तृष्णा तैयार हो चुकी थी।

तृष्णा- अरे उठो भी.. तुम्हें इतनी नींद कैसे आती है.. ? फिल्म मिल गई है, सुपरस्टार बनने जा रहे हो.. और तो और.. आज पहली बार जिन्हें अब परदे पर देखा है.. उनसे मिलने जा रहे हो। मुझे तो सोच-सोच कर ही रोमांच आ रहा है।

मैं- मुझे मेरी नींद सबसे प्यारी है। बाकी सब जाए भाड़ में।

मैं भी नहा धोकर कपड़े पहन कर तैयार हो गया।
ज्योति- हो गए तैयार.. बस दस मिनट में !
मैं- और नहीं तो क्या.. अब तुम्हारा पूरा मेकअप किट खुद पर लगा लूँ क्या ?
तृष्णा- अरे कुछ तो मेन्टेन करो.. इधर बैठो.. मैं तैयार करती हूँ।

मेरे चेहरे, हाथ और गले पर पता नहीं क्या-क्या लगा रही थी। खैर अब मैं भी तैयार हो गया था।

तभी ज्योति आई और उसने अपना लेडीज परफ्यूम मुझ पर स्प्रे कर दिया।
मैं- यह क्या किया तुमने.. ? लेडीज परफ्यूम क्यूँ स्प्रे किया तुमने ?
ज्योति- ओह..! सॉरी यार, मैं तो तुम्हें तैयार करने में भूल ही गई कि ये लेडीज परफ्यूम है।

तभी सुभाष जी का कॉल आया।
सुभाष जी- मैंने पता भेज दिया है और अब जल्दी आ जाओ। पार्टी शुरू हो चुकी है।
मैंने गुस्से से ज्योति को देखते हुए कहा- ठीक है सुभाष जी.. मैं आ रहा हूँ..

मैंने फ़ोन काट दिया।

अब मैं फिर से नहाने भी नहीं जा सकता था और नए कपड़ों में यही आखिरी था। सो मैंने ज्यादा वक़्त ना लेते हुए सबसे चलने को कहा और बाहर आ गए।

टैक्सी बुक करके हम दिए हुए पते पर पहुँच गए। वर्ली में एक होटल में ये पार्टी दी गई थी। हम सबने एक-दूसरे का हाथ थामा और होटल के अन्दर आ गए। पार्टी में जाने वालों की लिफ्ट ही अलग थी। नीचे स्टाफ के पास एक लिस्ट थी।

मैंने कहा- नक्श और मेरे साथ तीन गेस्ट की एँट्री भी होगी।

स्टाफ ने लिफ्ट में जाने को कहा।

अब हम सब अपने सपने को देखने से कुछ पलों की ही दूरी पर थे। मैं तो काफी हद तक नार्मल था.. पर बाकी तीनों को देख ऐसा लग रहा था मानो तीनों जोर-जोर से चिल्लाने वाली हों।

निशा और तृष्णा ने अब तक मेरे हाथ पकड़े हुए थे और अब इतनी जोर से हाथ दबा रही थीं कि अब हल्का-हल्का दर्द सा भी होने लगा था।

खैर.. हम अपनी मंजिल पर पहुँच गए थे.. सामने एक बड़ा सा दरवाज़ा था। गाने की धुन और लोगों के चिल्लाने का शोर इतना था कि दरवाज़े बंद होने के बावजूद भी मैं सुन सकता था। हम सबने एक गहरी सांस ली और दरवाज़े को धक्का दे अन्दर आ गए।

यहाँ इतना धुँआ था कि मैं बर्दास्त नहीं कर पाया और खांसते हुए बाहर आ गया। मेरी इतनी हिम्मत नहीं हो रही थी कि मैं दुबारा अन्दर जाने की कोशिश करता। मैं दीवार से टिक कर आँखें बंद कर खड़ा हो गया। एक बेहद मीठी आवाज़ से मेरा ध्यान टूटा।

किसी बेहतरीन कारीगर की तराशी हुई संगमरमर की मूर्ति की तरह थी वो..

कहानी पर आप सभी के विचार आमंत्रित हैं।
कहानी जारी है।
realkanishk@gmail.com

Other stories you may be interested in

बॉलीवुड अभिनेत्री की चुदाई

नमस्कार दोस्तो, कैसे हो आप सब ? आप सब ने अन्तर्वासना पर बहुत ही गर्म कहानियाँ पढ़ी होंगी. कुछ कहानियाँ इनमें से कल्पना की गई होती हैं. मैंने सोचा कि मैं भी आपको आज एक शानदार कहानी कल्पना के रूप में […]
Full Story >>>

बॉलीवुड अभिनेत्री रवीना टंडन की गांड मारी

सभी खुले भोसड़ों और बंद बुरों को मेरे खड़े लंड का सलाम ! मेरा नाम आनन्द है। मैं कई सालों से अन्तर्वासना की हिंदी सेक्स स्टोरी पढ़ रहा हूँ। आज पहली बार मैं भी आपके सामने एक कहानी लेकर हाज़िर हूँ। […]
Full Story >>>

चिकनी चूत वाली करीना की चुदाई

अन्तर्वासना के सभी पाठकों को मेरा नमस्कार। मेरा नाम जीतू है.. मैं उत्तर प्रदेश से हूँ। बात कुछ समय पहले की है। चूंकि मेरे प्रदेश में ज्यादा रोजगार तो है नहीं.. तो मैंने तय किया कि मैं बम्बई जाकर कुछ […]
Full Story >>>

एयर पोर्ट पर आलिया की चूत गान्ड चुदाई

बॉलीवुड : कल्पना की उड़ान ‘माफ कीजिए, क्या आप मेरे साथ आएँगी ?’ एयरपोर्ट पर अपनी माँ के साथ लाइन में खड़ी हुई आलिया से सुरक्षाकर्मी ने पूछा। औसत कदकाठी वाला सुरक्षाकर्मी बहुत ज्यादा आकर्षक नहीं था, उसने सुरक्षाकर्मियों वाली एक विशेष […]
Full Story >>>

मेरा गुप्त जीवन- 121

फ़िल्मी डांसरों की चूत चुदाई आज रात में कमरा नंबर 2 की डांसर लड़कियों की चुदाई तो अभी बाकी थी तो मैं जाकर उन्हीं के कमरे में थोड़ा लेट गया और ना जाने कब मेरी नींद लग गई और मैं […]
Full Story >>>